Naidunia (Indore), 24th April 2026, Naidunia City, Page – I

आइआइटी इंदौर ने बरसात का पानी रोककर बढ़ाई हरियाली

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी इंदौर) ने अपने परिसर में जल संरक्षण को लेकर महत्वपूर्ण कदम उठाया है। बरसात के पानी को बचाकर सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। संस्थान ने पिछले कुछ वर्षों में हुई बरसात के पानी को बहने से रोका है। साथ ही पानी को संरक्षित करने के लिए जलाशय-चेक डैम और जल संचयन की व्यवस्था की गई। इसका असर यह हुआ कि इलाके के भूजल स्तर में काफी सुधार देखा गया है। पानी को बचाकर परिसर में हरियाली भी बढ़ाई गई है। अधिकारियों के मुताबिक अगर वैज्ञानिक तरीके से जल प्रबंधन किया जाए तो गांवों में जल संकट की समस्या से निजात मिल सकती है।

एक नजर कुछ खास बातों पर

- संस्थान ने 2021 से लेकर 2025 के बीच वर्षा जल को बेकार बहने से रोका।
- 2022 के बाद परिसर की हरियाली में लगातार हुआ सुधार।
- मिट्टी में नमी और भूजल की उपलब्धता बेहतर हुई।
- जैव विविधता को सुरक्षित रखने में भी मददगार।

आइआइटी इंदौर ने 2021 से लेकर 2025 के बीच वर्षा जल को बेकार बहने से रोका है। जल संचयन की मदद से पानी संरक्षित भी किया है। इनका उद्देश्य सिर्फ पानी बचाना नहीं था, बल्कि उसे जमीन में समाहित कर भूजल स्तर बढ़ाना और मिट्टी में नमी बनाए रखना भी था। यही कारण है कि अब यहां पौधे लंबे समय तक हरे-भरे बने रहते हैं। चाहे मौसम कितना भी शुष्क क्यों न हो। इस बदलाव को वैज्ञानिक रूप से भी मापा गया है। इसके लिए नार्मलाइज्ड डिफरेंस वेजिटेशन इंडेक्स (एनडीवीआइ) का इस्तेमाल किया गया, जो किसी क्षेत्र की हरियाली और पौधों के स्वास्थ्य को मापने का एक आधुनिक तरीका है। पांच साल के आंकड़ों में यह देखा गया कि 2022 के बाद परिसर की हरियाली में लगातार सुधार हुआ है।

मौसम के अनुसार उतार-चढ़ाव अभी भी देखने को मिलते हैं। जैसे मार्च से मई के बीच हरियाली कम होती है और अगस्त से अक्टूबर में अधिक रहती है। मगर अब एक बड़ा बदलाव यह है कि इस दौरान भी परिसर पहले की तुलना में ज्यादा हरा-भरा बना रहता है। यह इस बात का संकेत है कि मिट्टी में नमी और भूजल की उपलब्धता बेहतर हुई है। यहां तक कि परिसर में हरित क्षेत्र बढ़ा है। निदेशक प्रो. सुहास जोशी का कहना है यह हरित परिवर्तन दिखाता है कि सही योजना और वैज्ञानिक सोच से बड़े पर्यावरणीय बदलाव संभव हैं। प्रो. मनीष कुमार गोयल के मुताबिक उपग्रह से मिले आंकड़े साबित करते हैं कि जल संरक्षण के उपाय सीधे तौर पर वनस्पति की वृद्धि में मदद करते हैं।

जल संरक्षण को लेकर शहरों और टाउनशिप में भी व्यवस्था कर सकते हैं। इससे न केवल जल संकट की समस्या का समाधान निकाला जा सकता है, बल्कि हरियाली बढ़ाने के अलावा जैव विविधता को सुरक्षित भी रख सकते हैं।